साहित्य समाज का दर्पण है

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। साहित्य में युगीन परिस्थितियां प्रतिबिम्बित होाती है। जैसे दर्पण में यथार्थ प्रतिबिम्बित होता है वैसे ही साहित्य में समाज का यथार्थ प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। साहित्यकारों का उत्तरदायित्व है कि वे ऐसे साहित्य की रचना करें जो समाज के भूले–बिसरे लोगों के मार्गदर्शक बनें। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक समाज की सभी परिस्थितियों का अंकन साहित्य के माध्यम से हुआ है। स्वामी विवेकानन्द, राजा राममोहनराय, स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे महान चिन्तकों ने समाज को एक दिशा दी। कबीर, सूर, तुलसी, जायसी जैसे मनीषियों ने समाज के बिम्ब को साहित्य में उतारा। तुलसीदासजी ने रामचरित मानस में मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम के चरित्र का ऐसा उदात्त चित्रण किया है कि वह ग्रन्थ आज समाज का कण्ठहार बन गया है। गीता, श्रीमद् भागवत आदि ग्रन्थ समाज के प्रेरणास्रोत हैं। गीता एक ऐसा साहित्यिक ग्रन्थ है जो अच्छाई की ओर ले जाता है। न्यायालयों में गीता के ऊपर हाथ रखकर शपथ दिलाने का प्रचलन भारत में है। साहित्य में समाज की अच्छाई–बुराई सभी प्रतिबिम्बित होते हैं। साहित्य के कारण ही हम चुगीन परिस्थितियों को जान पाते हैं।

साहित्यकार को प्रतिबद्धता स्वीकार करनी चाहिए या नहीं यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है। यदि साहित्यकार पशुओं की तरह एक खूंटे से बंध जाये तो वह न्याय नहीं कर सकता। प्रकृति ने पशुओं को खूंटे से बांधकर रखने के लिए इसलिए बनाया है कि जिससे प्रकृति को नुकसान न हो। साहित्यकार स्वच्छन्द होता है। इसलिए उसके विषय में कहा गया है कि जहां न जाये रवि वहां जाये कवि। इसका तात्पर्य यह है कि साहित्यकार रचना करने में स्वतन्त्र है। वह किसी भी परिस्थिति में बंधकर रचना नहीं करता। उसका साहित्य समाज का यथार्थ चित्रण करता है। आज के सन्दर्भ में यदि देखा जाये तो साहित्यकार युग निर्माता कहा जा सकता है। वह समाज के लिए एक दर्पण का काम करता है। वह राग–द्वेष मुक्त होकर रचना करता

है। ना काहू से दोस्ती, ना काहू से बैर की कहावत उसके विषय में पूर्ण रूप से सत्य होती है। साहित्यकार युगीन परिस्थितियों के अनुसार रचना करता है। आज का साहित्य साम्यवाद से प्रभावित है। समाज के निम्न वर्ग के लोगों की भावनाओं का प्रतिबिम्ब साहित्य में हुआ है। साहित्य को यदि युगीन सन्दर्भों में देखा जाये तो सबसे पहले वीरगाथा काल आता है। वीरगाथा काल के समय कवियों के द्वारा राजाओं की प्रशंसा और उनके उत्साह का वर्धन करके युद्ध के लिए प्रेरित करना मुख्य लक्ष्य था। इसलिए वीरगाथा काल में वीरतापूर्ण रचनाएं हुईं। वीरगाथा काल के पश्चात् साहित्य की धारा में परिवर्तन होता हुआ दिखाई देता है। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों में परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। राजनीतिक दृष्टि से भारत पर मुगलों का आधिपत्य स्थापित हो चुका था। जनता निराश थीं। जनता पर मुगलों के द्वारा अनेक अत्याचार किये जा रहे थे जिसका परिणाम यह हुआ कि भक्ति की शरण में जाकर जनता को संतोष प्राप्त हुआ। इसलिए इस काल में कितना भी साहित्य रचा गया उसमें भक्ति की धारा प्रवाहित होती है। भक्तिकाल में ईश्वर और प्रजा के बीच में दास्य भाव, वात्सल्य भाव दिखलाई देता है। निर्गुण, सगुण, रामभक्ति, कृष्णभक्ति धारा में प्रवाहित होकर साहित्यकारों ने साहित्य की सर्जना की है। रामभक्ति धारा में गोस्वामी तुलसीदास, कृष्णभक्ति शखा में सूरदास, मीरा जैसे कवियों ने सुन्दर रचनाएं करके जनता के धैर्य को सुरक्षित रखा। कबीरदासजी निर्गुण भक्तिधारा के प्रमुख कवि थे। समाज में ऊँच, नीच, जाति–पांत, और बाह्य आडम्बरों का खण्डन करके जनता के मन को निर्गुण भक्ति की तरफ आकर्षित किया। सूफी संतों में मलिक मुहम्मद जायसी ने प्रेमाश्रयी काव्यधारा की रचना करके जनता को प्रेम का पाठ पढ़ाया। इस काल में जनता की मनोवृत्ति ईश्वर के चरणों की तरफ आकर्षित हुई। अतः साहित्यकारों ने भी भक्ति भाव पूर्ण रचनाएं की। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। साहित्यकार केवल समाज का चित्रण ही नहीं करता बल्कि समाज को सुधारने के लिए क्या आवश्यक है इस बात का भी निर्देश करता है। भक्तिकाल के बाद उत्तर मध्य काल में जिसे रीतिकाल भी कहा जाता है साहित्य की धारा में परिवर्तन हुआ। इस समय मुगल बादशाह विलासितापूर्ण जीवन जीने के आदी हो गये थे। इसलिए साहित्य की धारा भी श्रृंगार रस के रस में सराबोर दिखाई देती है। रीतिकाल के

कवियों ने नायक–नायिका का श्रृंगारिक चित्रण करके जनता को मनोवृत्ति का अंकन किया है। जैसा राजा वैसी प्रजा की कहावत इस काल में उचित दिखाई पड़ती है। जब राजदरबार ही रंग रैलियों में मस्त रहता है तो प्रजा में भी वैसी ही भावना आ जाती है। प्रजा की मनोवृत्ति का अंकन साहित्य में दिखलाई देता है। आधुनिक काल साहित्य की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। उत्तरवर्ती मुगल शासकों ने विलासित का ऐसा नंगा नृत्य किया जिसका परिणाम यह रहा कि भारत में धीरे–धीरे व्यापार करने के लिए अंग्रेज, डच, फ्रांसीसी, पुर्तगाली आदि अनेक विदेशी ताकतें यहां आयीं और अन्त में अंग्रेजों ने अन्य सभी विदेशी शक्तियों को यहां से भगाकर भारत के अधिकांश भाग पर शासन किया। भारत की स्थिति का साहित्य में प्रतिबिम्बन होना आवश्यक था। इस समय जो साहित्य रचा गया उसमें राष्ट्र प्रेम का दर्शन होता है।